पाठ 13. गिरिधर की कुंडलियाँ

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को अच्छे व्यवहार, परोपकार तथा सोच-समझकर काम करने की सीख देना है। इन कुंडलियों द्वारा बच्चे मानवीय मूल्यों के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का ज्ञान भी अर्जित कर पाएँगे।

कविता का सारांश

गिरिधर कविराय कहते हैं कि जिस प्रकार नाव में यदि पानी भर जाए तो उसे हाथों में भरकर निकालना ही पड़ता है अन्यथा नाव के डूबने का डर बना रहता है उसी प्रकार घर में अधिक धन-संपदा आने पर दान करना चाहिए नहीं तो घर बिगड़ने की संभावना होती है। हमें दूसरों के काम आना चाहिए तथा हमेशा अपना व्यवहार अच्छा रखना चाहिए। किसी भी काम को करने से पहले सोच-विचार कर लेना चाहिए अन्यथा जग में हमारी हँसाई होती है। इससे किसी भी काम में मन नहीं लगता तथा चित्त में शांति नहीं पड़ती। बिना विचारे किए गए काम से जो दुख उत्पन्न होता है, उसे भुलाया नहीं जा सकता।

अध्यापन संकेत

प्रस्तुत कुंडलियों का सस्वर वाचन करें। बच्चों को भी इसी प्रकार वाचन करने के लिए प्रेरित करें। उन्हें गिरिधर कविराय के बारे में बताएँ। हिंदी काव्य साहित्य में गिरिधर जी की कुंडलियाँ एक विशेष स्थान रखती हैं। नीतिपरक और सद्व्यवहार की सीख देने वाली उनकी कुंडलियों में गहरी से गहरी बात को भी बहुत ही सरलता से पाठक के मन में रोपने का प्रयास किया जाता है। कुंडलियों का भाव स्पष्ट करें–

पानी बाढ़ो ························ अपनो पानी।– इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार नाव में पानी भर जाने पर उसे डूबने से बचाने के लिए दोनों हाथों से पानी उलीचना पड़ता है। उसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति के पास आवश्यकता से अधिक धन है तो उसे उस धन को परोपकार के काम में लगाना चाहिए, यही एक सज्जन की पहचान होती है। सज्जन व्यक्ति नि:स्वार्थ भाव से दूसरों का हित करता है तथा दूसरों की सेवा-सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहता है। कवि गिरिधर कहते हैं कि बड़े-बुज़ुर्ग यही सीख देते हैं कि व्यक्ति अच्छे आचरण और व्यवहार से ही समाज में प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है।

बिना बिचारे ························ जो बिना बिचारे।– इन पंक्तियों का भावार्थ है कि जो व्यक्ति किसी काम को बिना सोचे-समझे करता है, वह काम बिगड़ने पर अवश्य पछताता है। इस कारण न तो उसका काम ही सिद्ध हो पाता है तदुपरांत समाज में हँसी का पात्र भी बनता है। इस कारण उसे खाना-पीना, सम्मान, समारोह-सम्मेलन आदि कुछ भी अच्छे नहीं लगते। मन बेचैन रहता है। कवि गिरिधर कहते हैं कि बिना सोचे-विचारे किए गए काम से मिलने वाले दुख को टाला नहीं जा सकता तथा इससे उत्पन्न दुख और ग्लानि हृदय में खटकती रहती है।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- ❖ बच्चों को कुंडलियों की विशेषता बताएँ। बताएँ कि कुंडलियाँ जिस शब्द से शुरू होती है, उसी शब्द पर खत्म होती है। जैसे पाठ में दी गई दोनों कुंडलियों का प्रथम शब्द तथा अंतिम शब्द 'पानी' तथा 'बिना बिचारे' एक ही है। इसके अतिरिक्त कुंडलियों में दूसरी पंक्ति के अंतिम शब्दों से तीसरी पंक्ति की शुरुआत होती है।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।